प्रकाशनार्थ

19 जुलाई, 2024 गोरखपुर।

गुरु पूर्णिमा पर्व के पावन अवसर पर श्रीगोरखनाथ मन्दिर स्थित महन्त दिग्विजय नाथ स्मृति भवन सभागार में आयोजित साप्ताहिक श्रीरामचरित मानस कथा के पंचम दिवस में कथा व्यास सन्त हृदय बालकदास जी महाराज ने सीता स्वयंवर का वर्णन करते हुए कहा कि धनुष टूटने के बाद प्रभु श्रीराम क सम्मान करने और निर्विघ्न विवाह कराने के लिए भगवान् परशुराम वहाँ तुरन्त पहुचते हैं। विवाह के इच्छुक अन्य राजागण उनके पहुचते हीं भयभीत हो जाते हैं और सब मिलकर श्रीराम सीता विवाह का अनुमोदन करते हैं। इस प्रकार से स्वयंवर के पश्चात् राजा जनक का सन्देश प्राप्त होने पर राजा दशरथ भरत और शत्रुघ्न को लेकर मिथिला पहुचते हैं। चारों भाइयों का मण्डप बनता है और साथ में चारों भाइयों का विवाह सम्पन्न होता है।

उन्होंने "आज मिथिला नगरिया निहाल सखियां" जैसे अनेक भजन गाकर विवाह प्रसंग की कथा से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

उन्होंने कहा कि भगवान् राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। लोक मर्यादा का पालन करने के लिए उन्होंने वो सब कुछ किया, जो एक सामान्य जन अपने जीवन में करता है। प्रभु मिथिला में ससुराल की मर्यादा में वहाँ रुकते हैं और वहाँ की सखियों से गालियां भी बड़े भाव से सुनते हैं। लक्ष्मण जी के विचलित होने पर भगवान् उनको मर्यादा का पाठ भी पढाते हैं।

कथा व्यास ने कहा कि प्रभु श्रीराम परमात्मा हैं और माता जानकी स्वयं महामाया लक्ष्मी स्वरूपा है। दोनों के विवाह से परमात्मा की पूर्णता होती है। राम और सीता ये एक होते हुए भी शरीर भेद से दो हैं। इनका एक होना हीं परमानन्द का कारण बनता है।

उन्होंने कहा कि जिस समय राजाओं के लिए बहुपत्नी का प्रचलन था, उस समय भगवान् माता जानकी को मुख देखाई में जीवन भर एकपत्नीव्रत का पालन करने का वचन देते हैं। श्रीराम इससे सभी मानवों के लिए जीवन में एकपत्नीव्रत की मर्यादा स्थापित करते हैं।

उन्होंने कहा कि यह मानव शरीर अयोध्या है और इसमें रहने वाली आत्मा श्रीराम हीं हैं। जब तक श्रीराम रूपी आत्मा इस शरीर रूपी अयोध्या में रहते हैं तब तक अयोध्या रूपी शरीर आनन्द से भरी रहती है। जब राम अयोध्या से चले जाते हैं तब यहीं अयोध्या दुःखों से भर जाती है, इसमें रहने वाली दस इन्द्रियां राजा दशरथ हैं। राम के अयोध्या छोड़ते हीं दशरथ जीवित नहीं रह पाते हैं और उस समय लोगों को आभास होता है कि राम नाम सत्य है।

प्रभु श्रीराम की भक्ति के बिना हमारा जीवन पशुवत् होता है। भक्ति से विमुख हमारा जीवन पशु पक्षियों के जीवन की तरह व्यर्थ हीं बीत जाता है। वहीं माता पुत्रवती होती है जिसका पुत्र राम का भक्त हो, जिसका पुत्र राम की भक्ति नहीं करता, उसके रहते हुए भी उसकी माता को पुत्रवती कहलाने का अधिकार नहीं होता।

अतिथि सत्कार का महत्व बताते हुए कहा कि हमारे घर पर यदि कोई अतिथि आता है तो उसे साक्षात् नारायण का रूप समझना चाहिए। उसका विधिवत् सेवा सत्कार करना चाहिए। अतिथि देवो भव यह हमारा सनातन धर्म है। उन्होंने कैकेयी मन्थरा संवाद, तीनवर की याचना तथा राम के चौदह वर्ष के वनवास गमन का मार्मिक वर्णन कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया है।कथा विश्राम के बाद पीठ की आरती की गयी।

संचालन श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ॰ अरविन्द चतुर्वेदी ने किया।

इस अवसर पर श्रीगोरखनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, हनुमान मंदिर के महन्त रामदास सहित यजमान, सन्तगण व अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।